महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का सीएसआईआर के स्थापना दिवस समारोह में उद्बोधन

स्थान :- हबीबगंज नाका, भोपाल, दिनांक :- 25 सितम्बर, 2012 समय :- प्रात:11बजे

सर्वप्रथम भारत के इस प्रमुख अनुसंधान एवं विकास संगठन के स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर आप सबको मेरी बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं। स्थापना दिवस के इस समारोह में आपने मुझे भाग लेने का अवसर दिया इसके लिए मैं आपका आभारी हूं।

जैसा कि अभी बताया गया कि आपका संगठन उत्थान एवं विकास के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भागीदारी कर रहा है।

यह संगठन और इसकी अन्य शाखाएं सम्पूर्ण वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान की आवश्यकताएं पूरी करती है। सीएसआईआर प्राथमिक मापों के मानक, जैव संसाधनों एवं परम्परागत ज्ञान के रखवाले की तरह काम करता है। इसके पास बौद्धिक सम्पदा, सृजन एवं संरक्षण का नेतृत्व है। मुझे उम्मीद है यह संगठन अपने कार्य क्षेत्र में नवाचारों का प्रयोग करते हुए अपने विश्व स्तरीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होगा।

आज का युग तकनीकी एवं वैज्ञानिक क्षमताओं से परिपूर्ण है। जरूरत इन क्षमताओं का समुचित दोहन करने वाले मस्तिष्कों की है। मेरा स्पष्ट मानना है कि हमारे वैज्ञानिक दुनिया के अन्य देशों की तुलना में ज्ञान और अनुसंधानों के मामलों में बहुत आगे हैं। हमारे वैज्ञानिक हमेशा से यह साबित करने में सफल रहे हैं कि हम किसी से कम नहीं हैं।

यह सच है कि जब युरोप ने ज्ञान की गली में पाँव भी नहीं रखा था, तब भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय थे।

यहां उस समय भूगर्भ विज्ञान, सामुद्रिक शास्त्र, अंतरिक्ष विज्ञान, ज्योतिर्विज्ञान, गणित, शल्य चिकित्सा, रसायन, आयुर्विज्ञान जैसे विकसित विषयों पर अध्ययन- अध्यापन और शोध कार्य चल रहा था। आर्यभटट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, नागार्जुन, सुश्रुत, चरक, जैसे कई मनीषियों के नाम स्मृति में कौंधते हैं तो भारतीय मनीषा पर सहसा गर्व हो उठता है।

युवा वैज्ञानिकों से मैं कहना चाहता हूं कि अपने आसपास की समस्याओं एवं ज्वलंत मुद्दों के प्रति जागरूक रहें। शोध के लिए स्थानीय मुददों के चयन को प्राथमिकता दें क्योंकि अब समाज के

हितों से जुडे वैज्ञानिक मुद्दों पर शोध करने की आवश्यकता है। वैज्ञानिकों की उपलब्धियां उनके जीवन ज्ञान और अनुभव की लम्बी यात्रा का निचोड़ होती हैं। इन उपलब्धियों के बारे में देशवासियों को निरंतर अवगत कराया जाना चाहिए।

ऐसा करने से आम आदमी के जीवन के हर पहलू को विज्ञान और प्रौद्योगिकी की दृष्टि से उपयोगी बनाने में मदद मिलेगी। ऊर्जा और तकनीक के क्षेत्र में हम देश को विश्व में उच्च स्तर पर लाकर प्रतिष्ठापित करना चाहते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विश्व स्तरीय शोध एवं अन्वेषण के नये प्रकल्पों को बढावा देना होगा, तभी हम विज्ञान तथा टेक्नालॉजी के क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाने में अपनी भागीदारी निभा पायेंगे।

हमारा देश गांवों का देश है और कृषि हमारी अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है। युवा वैज्ञानिकों को इन दोनों बातों को ध्यान में रखकर अपने शोध कार्यों को दिशा देनी होगी। आज भी ग्रामीणों और किसानों को नये-नये वैज्ञानिक शोध एवं तकनीकों का पूरा लाभ नहीं मिल पा रहा है। इसके लिए जरूरी है कि अध्ययन, अनुसंधान और शोध के बारे में ग्रामीणों और किसानों को समय समय पर प्रदर्शनी आयोजित कर अवगत कराया जाये।

वैज्ञानिक खेतों में भी जाएं, किसानों से भी मिलें, गरीब और पिछडे वर्गो से भी मिलें ताकि उन्हें असली भारत के दर्शन हों। यह दर्शन आपके अध्ययन को निश्चित ही नई दिशा देगा।

दुनिया के विकसित देशों की सूची में भारत को शामिल होना है। इसके लिए बहुत जरूरी है कि नई पीढी विज्ञान के सभी क्षेत्रों में अपनी तन्मयता बनाये रखे। ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका समाधान विज्ञान के पास नहीं है। आवश्यकता केवल प्रयास करने की है।

हमें देश के समग्र विकास, जिसमें ज्ञान विज्ञान अनुसंधान के अतिरिक्त कृषि, प्रौद्योगिकी भी है, इन सब के विकास पर भी ध्यान देना होगा। चारित्रिक विकास और अनुशासन के बिना देश महान नहीं होता, इसलिए हमें नैतिक मूल्यों और नागरिक प्रतिबद्धताओं के लिए सचेत होना चाहिए।

आज के समारोह में संगठन के जिन सहभागियों को पुरस्कृत और सम्मानित किया गया है उनको मेरी बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

जय हिन्द।